E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2022; 4(1): 328-332
Received: 02-12-2021
Accepted: 06-01-2022

Laxmi Prasad Sharma
Assistant Professor,
Department of Hindi, Govt. of Sikkim, Sikkim, India

Corresponding Author:
Laxmi Prasad Sharma
Assistant Professor,
Department of Hindi, Govt. of Sikkim, Sikkim, India

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं पं. मोतीराम भट्ट के साहित्यिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन

Laxmi Prasad Sharma

सार:

'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं मोतीराम भट्ट के साहित्यिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन' उक्त शीर्षक पर हिन्दी में सिक्किम प्रोफेशनल युनिवर्सिटी से विद्यावारिधी की उपाधी प्राप्त करने हेतु तैयार किया गया सम्बन्धित विषय में पूर्व कार्य की समीक्षा है। उक्त लेख में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और पं.मोतीराम भट्ट पर हुए पूर्व शोध, पुस्तकों तथा पत्रपत्रिकाओं से तथा प्रामाणिक शोध लेख आदि प्राप्त सामाग्री के आधार पर तथ्यों के साथ प्रस्तुत करने का प्रयाश किया गया है। यद्यपि यहाँ पर लिखित सामाग्री ही सबकुछ नहीं है, किन्तु तथ्य संकलन में जितनी सामाग्री अपनी तरफ ले उपलब्ध हो सकी उन्हे क्रमबद्ध प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तावित विषय को संकलित करने हेतु पुस्तकों के साथ शोधगंगा, ईजरनल आदि का भी सहयोग लिया गया है। उक्त शोध विषय में पूर्वकार्य की समीक्षा निम्न शीर्षकों को आधार मानकर प्रस्तुत किया जाएगा।

(i) पूर्व शोध प्रबन्धों से प्राप्त सामाग्री के आधार पर
(ii) पुस्तकों से प्राप्त सामाग्री के आधार पर
(iii) पत्र-पत्रिकाओं तथा अन्य श्रोत से प्राप्त सामाग्री के आधार पर

क. पूर्व शोध प्रबन्धों से प्राप्त सामाग्री के आधार पर अध्ययन:

हरेक भाषा के साहित्य का सम्बन्ध मानवता से है अतः साहित्य असीमित और निर्वाध है। मानवीयमूल्यों का पक्षगामी होने के कारण इसे एक भाषा-भाषी लोग दूसरी भाषा-साहित्य का अनुसरण करते हैं जिसे हम भाषा साहित्य का प्रभाव कहते हैं। इसी तरह एक भाषा साहित्य का दूसरी भाषा साहित्य के साथ आलोचना, समालोचना करते हैं और एक दूसरे के साथ तुलनात्मक अध्ययन भी बराबर करते हैं ताकि सभी भाषा और साहित्य में सन्तुलित सम्बन्ध बना रहे। उक्त शोध इसी कडी का एक अंग है। जो हिन्दी एवं नेपाली साहित्य के युगपुरुषद्वय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं मोतीराम भट्ट के साहित्यिक योगदान सदा अविस्मरणीय बना रहे। यद्यपि हिन्दी और नेपाली साहित्य में निरन्तर तुलनात्मक शोध होते रहे हैं। इसी निरन्तरता को गति देने के प्रयाश से सर्वप्रथम इस क्षेत्र में डॉ. मथुरादत्त पाण्डे ने "नेपाली और हिन्दी भक्ति-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन।" यह शोध ग्रन्थ पंजाब विश्वविद्यालय की पी.एच.डी.की उपाधि के लिए प्रस्तुत किया था। इसे ही नेपाली एवं हिन्दी का प्रथम तुलनात्मक अनुसन्धान माना जाता है। उक्त शोध में हिन्दी एवं नेपाली भक्तिसाहित्येतिहास के अनेक सन्त एवं भक्त कवियों को एक साथ प्रकाशित करने का कार्य किया गया है। उक्त शोध में माध्यमिककालीन नेपाली कवियों में भारतीय प्रभाव तथा प्रेरित बताते हुए मोतीराम को भी भारतेन्दु से प्रेरणा मिलने की बात लिखते हैं "मोतीराम भट्ट ने भारतेन्दु से प्ररणा ली"[1]

नेपाल में पहलीबार गजल के क्षेत्र में डॉ.घनश्याम न्यौपाने ने "नेपाली तथा हिन्दी गजलको तुलनात्मक अध्ययन' में शोधकार्य किया जो गजल के क्षेत्र नेपाल का पहला अनुसन्धान माना जाता है। नेपाल से निकलने वाली त्रैमासिक पत्रिका 'पल्लव साहित्यिक पत्रिका' के गजल विशेष में यह बात स्पष्ट लिखा गया है "नेपाली तथा हिन्दी गजलको तुलनात्मक अध्ययन' मा शोध पत्र तयार पारेर गजलविधाबाट नेपालमै पहिलो विद्यावारिधी गर्नुहुने डॉ.घनश्याम न्यौपाने 'परिश्रमी', त्यस्तै मोतीराम भट्टका गजलहरुमा शोधपत्र तयार पारेर गजलविधामा विद्यवारिधी गर्नु हुने व्यक्ति डॉ. कृष्णहरि बराल हुन्।"[2] सन् १९८४ में मणिपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से चन्द्रशेखर दुवे ने 'हिन्दी और नेपाली की व्याकरणिक कोटियों का तुलनात्मक अध्ययन'नामक शोधप्रबन्ध लिखा तो देवेन चन्द्र ने असमीया भाषा में "भारतेन्दुवहरिश्चन्द्र और लक्ष्मीनाथ बेजवरोर रचनावलित हास्य व्यङ्गर तुलनामुलक अध्ययन" सैलेन बरली के निर्देशन में प्रस्तुत शोध में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के हास्यव्यंग्यात्मक रचनाओं का असमी भाषा के वरिष्ट साहित्यकार लक्ष्मीनाथ बेजवरोर की हास्यव्यंग्यात्मक रचनाओं के सात तुलनात्मक अध्ययन किया है।

[1] . डॉ.मथुरादत्त पाण्डे, शोध ग्रन्थ-नेपाली और हिन्दीः भक्तिकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली, पृष्ठ-७४

[2]. सम्पादक-भरतप्रसाद लामिछाने, पल्लव साहित्यिक पत्रिका, शीर्षक-पल्लव साहित्य विविधःविगत र वर्तमान, सम्पादकीय पृष्ठ-३

मद्रास विश्व विश्वविद्यालय से डॉ. हृदय नारायण पाण्डे के शोध निर्देशन में शोधार्थी डॉ.अशोक कुमार द्विवेदी का "भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं सुब्रमण्यम भारती के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना तुलनात्मक अध्ययन" शोध प्रबन्ध प्राप्त होता है। जिसमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं सुब्रमण्यम भारती के राष्ट्रीय चेतनापरक रचनाओं में राष्ट्रीयता को परिलक्षित कर अध्ययन किया गया है। ईश्वरसिंह आर. चौहान का शोध ग्रन्थ "भारतेन्दु और नर्मद युग के निबन्ध साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन" नामक शोध ग्रन्थ में भारतेन्दुयुगीन हिन्दी निबन्धों एवं गुजराती निबन्धकार नर्मद कालीन निबन्धों पर गहन अध्ययन किया गया। पुणे विश्वविद्यालय से शोधार्थी सदाशिव बड़े का "भारतेन्दु के साहित्य में भारतीयता" उक्त शोध में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के साहित्य में भारतीय जनमानस को भारतीय अस्मिता के साथ जोड़ने की अपूर्व क्षमता होने की बात कही गई है। तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में शशिकला एम.मूले का शोध ग्रन्थ "हिन्दी और मराटी दलित साहित्य एक तुलनात्मक अध्ययन" हिन्दी और मराठी साहित्य में दलितों पर किये गए चिन्तन का विस्तृत अध्ययन किया गया है। इसी प्रकार नेपाली सामाजिक उपन्यासकार का हिन्दी सामाजिक उपन्यसकारों के साथ तुलना आदि बहुत सारे क्षेत्र में कार्य हुए हैं अथवा हो रहे हैं, परन्तु अबतक ते अध्ययन में 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं पं.मोतीराम भट्ट के साहित्यिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन' सम्बन्धित विषय में केन्द्रित रहकर अबतक कोई भी शोधकार्य नहीं हुआ है अतः हिन्दी एवं नेपाली तुलनात्मक शोध के क्षेत्र में प्रस्तावित शोध शीर्षक नितान्त नवीन ठहरता है।

ख.पुस्तकों से प्राप्त सामाग्री के आधार पर

डॉ. नामवर सिंह का 'भारतेन्दु एवं पुनर्जागरण' उक्त ग्रन्थ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और उनके साहित्य को समझने का अहम ग्रन्थ है। रामस्वरुप चतुर्वेदी अपने ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास' में लिखते हैं "हिन्दी साहित्य में पुनर्जागरण भारतेन्दु के माध्यम से अवतरित होता है, और तब वह स्वाभाविक है कि वे आधुनिक काल के प्रवर्तक माने जाते हैं।"[3] *कर्मेन्दु शिसिर ने अपनी समालोचना ' हिन्दी नवजागरण और जातीय गद्य परम्परा' अन्तर्गत शीर्षक 'नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र'* में भारतेन्दु की रचनाओं में देश के साधारण लोगों की पीड़ा को व्यक्त करने की क्षमता का उल्लेख किया गया है *"भारतेन्दु ने गावों की यात्रा में जनता की जिस गरीबी, अशिक्षा, पिछड़ेपन और नारकीय जीवन को देखा था उससे बेहद मर्माहत हुए थे। सरकार की घोर उपेक्षा और जनविरोधी नीतियों के कारण ही जनता की ऐसी दुरावस्था थी-इस बात को भारतेन्दु ने गंभीरता से समझा था।"*[4] डॉ. नगेन्द्र तथा डॉ. हरदयाल के द्वारा सम्पादित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में भारतेन्दु के काव्यरुपों की विविधता, इतिवृतात्मकता, हास्य-व्यंग्य तथा उर्दू शैली में कविता लिखने की विशेषतओं का उल्लेख किया है।[5] लेखिका डॉ.कुसुम राय द्वारा लिखित 'हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ट इतिहास' में भारतेन्दु को खड़ी बोली नाटक के जनक के रुप में स्वीकार करते हुए लिखा "खड़ी बोली में नाटक का सूत्रपात भारतेन्दु ने किया। *भारतेन्दु ने युगीन परिस्थितियों तथा नवीन शिक्षा प्रणाली के अनुसार प्राचीन आचार्यों तथा पाश्चात्य के सिद्धान्तों का समन्वय अपने नाटकों में किया है*[6]। कुँवर अग्रवाल ने "भारतेन्दु के नाटकलेखन का सफरनामा" लेख में बनारस की नाट्य संस्था 'द इंडियन नेश्नल थियेटर' के लिए भारतेन्दु ने अपनी कालजयी नाटक 'अँधेरनगरी' लिखने की बात कही है। 'हिन्दी गद्य का स्वरुप विकास' नामक अपनी लेख में भारतेन्दु की प्रेरणा से ही उनके जीवन-काल में ही अनेक गद्य-लेखकों एवं कवियों का अच्छा मण्डल बनने का उल्लेख किया गया है। डॉ.गणपतिचन्द्र गुप्त ने अपनी इतिहास ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' में भारतेन्दु के प्रभाव तथा उनके समकालीन साहित्यकारों पर उनके प्रभाव का चित्रण करते हुए कहा है – *"भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के प्रभाव से उनके युग में साहित्यकारों का एक ऐसा मंडल तैयार हो गया था जिसने काव्यादर्श, विषय-वस्तु, भाव एवं शैली की दृष्टि से भारतेन्दु का अनुकरण-अनुसरण किया; इस मंडल को 'भारतेन्दु-मंडल' की संज्ञा दी जा सकती है।"*[7] डॉ.जगन्नाथ प्रसाद शर्मा ने "हिन्दी निबन्ध साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन" में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिन्दी निबन्ध का जनक माना है। रामस्वरुप चतुर्वेदी की कृति *'हिन्दी काव्य का इतिहास'* में भारतेन्दु के व्यक्तिगत और उनके साहित्यिक जीवन में भक्तिभाव की प्रधानता होने की बात कही है। उक्त ग्रन्थ में आधुनिक स्वच्छन्दतावादी कवियों के कृतियों में व्यक्तिगत और रचनात्मक कोण से भक्तिभावना की प्रधानता होने की बात का प्रमाण मिलता है। भारतेन्दु और प्रसाद साहित्य का उल्लेख करते हुए लिखा गया है "भारतेंन्दु गहरे भक्त थे व्यक्तिगत जीवन में भी और रचना में भी। प्रसाद व्यक्तिगत जीवन में पूजन-आरधना तो करते हैं, पर कविता में पहले खड़ी बोली संकलन 'कानन-कुसुम' को छोड़कर उनके यहाँ विनय और भक्ति की रचनाएँ शायद ही कहीं मिलें। भारतेन्दु अपनी नाटिका 'श्रीचंद्रावली' गहरे भक्ति-भाव में डूबकर सीधे प्यारे कृष्ण को समर्पित करते है।"[8] डॉ. केशरी नारायण शुक्ल ने स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों की उपयोगिता के लिए सम्वत्-२००८ में 'भारतेन्दु के निबन्ध' नामक निबन्धसंग्रह का संकलन किया है। जिसमें भारतेन्दु की भाषा-शैली तथा उनके निबन्ध साहित्य का सविस्तार मूल्यांकन किया गया है। एक और निबन्ध संकलन 'गद्य- सुषमा' हिन्दी के प्रख्यात निबन्धकारों के लेखन शैली को उजागर करते हुए भारतेन्दु द्वारा अपनाये गये गद्य की शैली का समग्र विश्लेषण किया गया है। समालोचक रतन कुमार ने अपनी पुस्तक 'आधुनिक हिन्दी कविता का वैचारिक पक्ष' में भारतेन्दु के उपदेशात्मक संभाषण का जिकर करते हुए उनके द्वारा बलिया शहर में दिये गये भाषण का उल्लेख किया किया है-*"राजे-महाराजे, नवाब हाकिम देशोन्नति नहीं कर सकते। कुछ समय बचा भी तो उनकी क्या गरज है कि हम गंदे-काले आदमियों से मिलकर अपना अनमोल समय-खोवें। भाइयों! राजामहाराजाओं का मुख मत देखो, मत यह आशा रखो कि पंडित जी-कथा में कोई ऐसा उपाय बतायेंगे कि देश का रुपया और वृद्धि बढ़े। तुम आप ही कमर कसो, आलस छोड़ो।"*[9] मुनीश शर्मा ने अपनी कृति *'हिन्दी नाटक -मावनाधिकारों की रंगभूमि' में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 'अंधेर नगरी'* नाटक को आजादी पूर्व की राजनैतिक परिस्थिति को बयाँ करने वाला नाटक तथा धर्मवीर भारती के अंधायुग नाटक को स्वतन्त्रतोत्तर की राजनैतिक परिदृश्य को प्रकाशित करने वला नाटक बताते हुए दोनों के मूल चिन्तन में अभिन्नता होने की बात को स्वीकार करते हुए लिखा है- *"भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की तात्कालिक स्थितियाँ महाभारत युग के मार्फत प्रस्तुत किये गए समय से भिन्न थी। भारती के अंधायुग का समय आजादी के बाद का है जहाँ शासक और राष्ट्र हमारा अपना है।* 'भारतेन्दु की अंधेर नगरी' और 'अंधायुग; *की मूल चिंता एक ही है। दोनों अपने समय, समाज को समृद्ध और विकासोन्मुख देखना चाहते हैं।"*[10] 'हिन्दी गजल दशा और दिशा' नामक कृति में डॉ.नरेश ने रामविलाश शर्मा के हवाले भारतेन्दु को गजल विधा में कनिष्ठ होने का प्रमाण दिया है, परन्तु इसी प्रसंग में डॉ.सुधीन्द्र इसे प्रमाणित करना चाहते हैं कि गजल विधा का सूत्रपात भारतेन्दु युग से प्रारम्भ हुआ लिखते हैं- *"भारतेन्दु की गजल कहने वालों में जो बड़े हैं, हरिश्चन्द्र उनसे छोटे है"*[11]

---

3. रामस्वरुप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, पृ-८५

4. शिशिर कर्मेन्दु, हिन्दी नवजागरण और जातीय गद्य परम्परा, आधार प्रकाशन, पंचकुला, हरियाणा, प्रथम संस्करण

5. संपादकद्वय- डॉ. नगेन्द्र. डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर प्रकाशन, ७२वां संस्करण

6. डॉ.राय कुशुम, हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, विश्व विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, पृ-६१

7. गणपति चन्द्र गुप्त, हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास-द्वितीय खण्ड, लोकभारती प्रकाशन-इसाहाबाद, पृ-२८

8. चतुर्वेदी रामस्वरुप, हिन्दी काव्य का इतिहास,लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद,संस्करण-२०१२, पृष्ठ-१३२

9. रतन कुमार, आधुनिक हिन्दी कविता का वैचारिक पक्ष, विश्वविद्यालय प्रकाशन-वाराणसी, प्रथम संस्करण, पृष्ठ-४०

10. मुनिश शर्मा, हिन्दी नाटक नानवाधिकारों की रंगभूमि, तक्षशिला प्रकाशन, प्रथम संस्करण-२०१३, पृष्ठ-७८

11. डॉ. नरेश, हिन्दी गजल दशा और दिशा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-२००४

ग. पुस्तकों से प्राप्त सामाग्री (पं.मोतीराम भट्ट)

लेखक असीत राई ने 'भारतीय नेपाली साहित्यको इतिहास' नामक अपने ग्रन्थ में मोतीराम भट्ट को भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से सम्पर्क और उनसे प्रभावित तथा पाश्चात्य शिक्षा से प्रेरित बताते हुए लिखा है "राजनैतिक खिंचातानीको समय कासीबाट मोतीराम भट्टले सर्वप्रथम नेपाली पत्रिका 'गोर्खा भारत जीवन' *सन् १८८७ मा प्रकाशित गरेर अर्को ऐतिहासिक ढुंगाको स्थापना गरे। पाश्चात्य शिक्षा प्रणालीले अनुप्रेरित भएका मोतीराम भट्ट नेपाली साहित्यमा युगान्तकारी कार्य गर्न उत्सुक थिए। यसबाहेक हिन्दी कविहरु विशेष भारतेन्दु हरिश्चन्द्रसँग प्रभावित भएर आफनो कवि-मण्डली गठन गरेर यिनले सबैमा उत्साह जगाए।"*[12]

'मोतीराम भट्ट र संसर्गी कवि' नामक कृति में मोतीराम भट्ट ने विदेश तथा स्वदेश के सहयोगियों के द्वारा संवत् १९४५ साल में 'मोतीकृष्ण धीरेन्द्र कम्पनी', वि.सं.१९५० साल में 'पाशुपत छापाखाना' की स्थापना की। काशी में रामकृष्ण वर्मा के सहयोग से अनेक नेपाली पुस्तकों का प्रकाशन किया। वि.सं.१९४८ साल साउन मास से 'गोर्खा भारतजीवन' साप्ताहिक प्रकाशन को संभावित करने की बात कही है।

रमेश श्रेष्ठ ने अपने ग्रन्थ 'नेपाली कविताको प्रवृति' में मोतीराम भट्ट के काशी में रहते समय से ही समस्यापूर्ति लिखकर कविता यात्रा की शुरुआत करने की बात कही है । वहीं मोतीरा भट्ट द्वारा सायरी, कविता, गजल से लेकर पिकदूत पर्यन्त लिखने का संकेत भी दिया गया है। डॉ. दिवाकर प्रधान की अपनी लेख 'मोतीमहक र' पिकदूत' परिचय' शीर्षक अन्तर्गत मोतीराम भट्ट के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का सारगर्भित विवेचन किया है। इसमें नेपाली पत्रकारिता पर चर्चा करते हुए लिखा है- *"भारतेन्दु हरिश्चन्द्र र रामकृष्ण वर्माको हिन्दी पत्रिका भारत जीवनको यस प्रकाशनस्वरुप मोतीरामको प्रबन्धकत्वमा गोर्खा भारत जीवन पत्रिकावि. सं. १९४८(सन् १८९९)- तिर प्रकाशमा आएको कुरा हालै प्रमाणित भएको छ। यसलाई नेपाली भाषामा निस्कने सबैभन्दा पहिलोपत्रिका मानिन्छ।"*[13]

'पं.मोतीराम भट्टका साहित्यमा पाइने विशेषता' नामक शीर्षक में मोतीराम भट्ट के साहित्यिक योगदान का उल्लेख करते हुए उनके द्वारा लिखित 'गजेन्द्रमोक्ष' *से ही नेपाली साहित्य में प्रकृति काव्य लेखन परम्परा का श्रीगणेश होने का भी संकेत किया गया है।* 'नेपाली साहित्यको परिचयात्मक इतिहास' में *डॉ.घनश्याम नेपाल ने एक कदम आगे निकलकर* कहा *"मोतीराम भट्टले भानुभक्तलाई आदिकविको उपाधि दिएपछि सबैले भानुभक्तको नाउँको अघिल्तिर यो उपाधि जोड़ेर प्रयोग गर्न थाले।"*[14] वह यह भी मानते हैं कि सचेत रुप में नेपाली साहित्येतिहास लेखन परम्परा का प्रारम्भ विलम्भ से हुआ है, किन्तु असचेत रुप में हिन्दी साहित्य में भक्तमाल तथा चौरासी वैष्णवन की वार्ता की तरह नेपाली जगत के अपने पूर्वज साहित्यकारों उनके जीवन तथा कृतियों पर कलम चलाने वाले बहुत साहित्यकार रहे इन साहित्यकारों में से सर्वप्रथम मोतीराम भट्ट का ही नाम लिया जाना चाहिए । सन् १८८६ ई. के दौर में लिखित इस पंक्ति को उन्होंने अपने ग्रन्थ में अभिव्यंजित किया है- *भानूभक्त बिहारिलाल छविलाल् पातञ्जली नाम् गरी। नेपालीहरुमा अनेक कवि छन् भाषा सिलोक् मा रची। फेरी खूप रसीक भाइहरुमा राजीवलोचन् भनी। प्रख्यात छन् कवि हुन् बड़ा सरसका नेपाल देश्का मणी।।* सन् १८९१ में 'कवि भानुभक्त आचार्यको जीवन चरित्र' में वे लिखते हैं- *"यसरी मोतीले भानु भक्त दिए भानुभक्तले मोतीराम बनाए। व्यक्तिलाई चिन्न व्यक्तिकै आवश्यकता पर्छ।"*[15] "मोतीराम भट्ट र संसर्गी कवि" शरदचन्द्र शर्मा, भट्टराई, रमा शर्मा तथा शिव रेग्मी द्वारा संकलित यह पुस्तक शोधपरक संकलन है। उक्त ग्रन्थ में मोतीराम को उनके पाश्चात्य शिक्षा से प्राप्त ज्ञान का प्रयोग न होने की विडम्बना का उल्लेख किया गया है- अल्प जीवनकाल में विविध स्थिति का सामना करने वाले मोतीराम में देशप्रेम एवं भाषा प्रेम तो था ही पाश्चात्य शिक्षा ग्रहण करने के बावजूद भी वे उनका प्रयोग नहीं कर पाने का मलाल उन्हें रहा। लेखक गणेशबहादुर प्रसाई ने अपने ग्रन्थ 'माध्यमिककालीक काव्यसाहित्यको विवेचना' में मोतीराम भट्ट को नेपाली साहित्य में श्रृंगारधारा के प्रवर्तक तथा प्रतिनिधि कवि के रुप चिन्हित किया है। नाटककार के रुप में प्रसिद्ध ``पहलमानसिंह स्वाँन(१९३५-९९) ने 'पिकदूत' लिखकर एक बार पुनः मोतीराम भट्ट की याद को तरो-ताजा करने का काम किया है। तारानाथ शर्मा ने उपने 'नेपाली साहित्य को इतिहास' में लिखा है - मोतीराम ने समकालीन लेखकों को संगठित कर नेपाली गद्य का अद्भूत विकास किया। इन्हीं के कारण देश के बाहर गोर्खे खबर कागत सुन्दरी तथा माधवी जैसी पत्रिकाओं ने जन्म लिया। *राममणि रिसाल* की कृति 'नेपाली काव्य र कविता' में मोतीराम को अपने समय के रसिक मण्डली का प्रतिनिधित्व करने वाले के बताया है *"मोतीराम भट्टको रसिक-मण्डली श्रृंगार रचना लेख्नमा सिद्धहस्त देखिन्छन्। मोतीरामका प्रेमविषयक कविता पहिलोपल्ट सङ्कलित रुपमा मनोद्वेग प्रवाहले बाहिर ल्यायो। एकातिर शास्त्रीय छन्दपरम्परालाई थामेर अर्कातिर नेपालीमा गजल लेख्ने चलनको शुरुआत गर्ने मोतीराम भानुभक्तीय काव्यपरम्परालाई बदल्दै लोककाव्यको धरातलतिर डाग्छन्। परत्र सपार्न मात्र भक्ति-कविता नलेखी सङ्गठनात्मक रुपमा समस्यापूर्ति को चलन चलाई दौंतरीहरुलाई नेपाली भाषा र साहित्यको अभिवृद्धि गर्न कम्मर कसाउन लगाउने मोतीराम नेपाल र नेपालीका सच्चा सेवक"*[16] 'नेपाली साहित्यको इतिहास' उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय मानविकी विद्याशाखा पाठ्यक्रम के एकाइ १ में 'साहित्येतिहास र नेपाली साहित्यको इतिहासलेखनको विकास' शीर्षक अन्तर्गत नेपाली में साहित्येतिहास लेखन का बीजीरोपण 'कवि भानुभक्त आचार्यको जीवनचरित्र' लिखने के अनन्तर ही हुआ प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अनुसार *"मोतीराम भट्टको कवि भानुभक्त आचार्यको जीवन चरित्र (वि.सं,१९४८) दोखि नेपाली साहित्यको इतिहासलेखनको बीजारोपण भएको हो। नेपाली साहित्यको पहिलो ग्रन्थकार इतिहास कृति यज्ञराज सत्यालको* 'नेपाली साहित्यको भूमिका' *(वि.सं.२०१७) हो। यसरी हेर्दा मोतीराम भट्टदेखि आरम्भ भएको साहित्यको ऐतिहासिक अध्ययन परम्पराले यज्ञराज सत्यालको पुस्तक इतिहासग्रन्थ प्राप्त गर्न सफल भएको हो।"*[17] प्रा.केशव प्रसाद उपाध्याय ने अपनी 'विचार र व्याख्या' नामक कृति में मोतीराम को नेपाली श्रृंगारकाल के नेता राष्ट्रप्रेमी, भाषाप्रेमी व्यक्तित्व के रुप में चित्रित किया है। नाटककार बालकृष्ण सम ने 'मोतीराम' नामक नाटक में मोतीराम भट्ट को कर्मयोगी साहित्यप्रेमी निरन्तर सरस्वती साधना में लगे रहने वाले व्यक्तित्व के रुप में चित्रित किया है। 'मोतीमहक र 'पिकदूत' परिचय' में एक श्रेष्ठ कवि एवं कुशल गायक के रुप में मोतीराम का परिचय दिया गया है। वहीं गणेशबहादु प्रसाईं ने अपने लेख 'पं.मोतीराम भट्ट र उनको शृङ्गार साहित्य' अन्तर्गत उनके 'पिकदूत' रचना को विप्रलम्भ श्रृंगार का प्रथम मौलिक रचना स्वीकार किया है। दयाराम श्रेष्ट के 'नेपाली साहित्यको संक्षिप्त इतिहास' में मोतीराम भट्ट के सूक्तिसिन्धु की रचना के उपज का कारण तत्कालीन परिस्थिति तथा दरवारी संस्कृति के प्रभाव को बताया है। 'नेपाली साहित्यको संक्षिप्त इतिहास' के 'समालोचना' शीर्षक अन्तर्गत मोतीराम के 'कवि भानुभक्तको जीवन चरित्र' को नेपाली समालोचना का पहला सोपान माना है। *'पं.मोतीराम भट्टको काव्य वाटिका यात्राको अवलोकन'* शीर्षक अन्तर्गत गणेश बहादुर प्रसाईं ने मोतीराम भट्ट के साहित्यिक यात्रा के संघर्ष का उल्लेख करते हुए विपरित परिस्तितियो में उनकी साहित्यिक साधना का मार्मिक चित्रण किया है। डॉ.गोविन्दराज भट्टराई की कृति 'काव्यिक आन्दोलनको परिचय' के 'मोतीमण्डली' शीर्षक अन्तर्गत मोतीमण्डली की स्थापना से सूक्ति सिन्धु की रचना तक के प्रभाव को प्रकाशित करते हुए कहा *" १९३८ के दरमियान बनारस में अध्ययन हेतु गए मोतीराम भट्ट ने अपने समकालीन सहकर्मियों को साहित्यरचना के मार्ग में प्रोत्साहित तथा प्रेरित करने के उद्देश्य से मोतीमण्डली की स्थापना की थी। इस मण्डली ने अनेक श्रृंगारिक कविताओं की रचनाएँ की। इसी समय से समस्यापूर्ति की परम्परा चल पड़ी जो*

[12]. असीत राई, भारतीय नेपाली साहित्यको इतिहास, साझा पुस्तक प्रकाशन, दार्जीलिंग, पृ-४८

[13]. डॉ. प्रधान दिवाकर, कविताको कुरा, शीर्षक- मोतीमहकर पिकदूत परिचय, जनपक्ष प्रकाशन गान्तोक, पृष्ठ-९२

[14]. प्रो. घनश्याम नेपाल, नेपाली साहित्यको परिचयात्मक इतिहास, जनपक्ष प्रकाशन, गान्तोक, सिक्किम

[15]. सम बालकृष्ण, मोतीराम, प्रकाशकीय-२०३३, साझा प्रकाशन

[16]. रिसाल राममणि, नेपाली काव्य र कविता-शीर्षक-लोककविता र काव्य-साझा प्रकाशन-संस्करण-पहिलो-२०६९, पृष्ठ-२०-२१

[17]. उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, मानविकी विद्याशाखा, नेपाली साहित्यको इतिहास (info@uou.ac.in)

आज भी यथावत है। समस्यापूर्ति की लोकप्रियता नेवारी भाषा तक पहुँच चुकी थी महाकवि सिद्धिदास तक ने समस्यापूर्ती श्लोकों की रचना की थी। १९७४ में प्रकाशित सूक्तिसिन्धुको मोतीराम के समय में प्रोत्साहित श्रृंगारिक कविकाताओं के चरमोत्कर्ष के रुप में लिया जाता है। मोतीरामभट्ट के इस कवि मण्डली में पद्मविलास, काशीनाथ, चेतनाथ आचार्य, तेजबहादुर राना, नरदेव पाण्डे, गोपीनाथ लोहनी, मरीचमानसिंह, तीर्थराज पाण्डे आदि सामिल थे। इस मण्डली ने अनेक श्रृंगारिक कविताओं की रचनाएँ की। इसी समय से समस्यापूर्ति की परम्परा चल पड़ी जो आज भी यथावत है। समस्यापूर्ति की लोकप्रियता नेवारी भाषा तक पहुँच चुकी थी महाकवि सिद्धिदास तक ने समस्यापूर्ती श्लोकों की रचना की थी। १९७४ में प्रकाशित सूक्तिसिन्धु को मोतीराम के समय में प्रोत्साहित श्रृंगारिक कविकाताओं के चरमोत्कर्ष के रुप में लिया जाता है।[18]

घ. पत्र-पत्रिकाओं तथा अन्य श्रोत से प्राप्त सामाग्री के आधार पर अध्ययन :

नेपाल से निकलने वाली 'रुपन्देही साहित्यिक पत्रिका' अन्तर्गत बालकृष्ण भट्टराई अपना लेख शीर्षक 'रुपन्देही साहित्यिक पत्रकारिताः एक झलक' में उल्लेख करते हैं *''नेपाली पत्रपत्रिकाको ऐतिहासिक अध्ययन गर्दा बनारसमा पढ़न बसेका मोतीराम भट्टको प्रयासमा हिन्दी भाषाबाट नेपालीमा अनुदित* 'गोर्खाभारत जीवन' *(वि.सं-१९४३) नेपाली भाषामा छापिएको पहिलो नेपाली पत्रिका मानिएको छ।''*[19]

निष्कर्ष:- प्राप्त सामाग्री तथा उपरोक्त विषयों के अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और मोतीराम भट्ट का अपनी साहित्यिक भूमि और मातृभाषा को समृद्ध करने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। तत्कालीन परिस्थिति तथा साहित्यिक अपेक्षा पर दोनों साहित्यकार खरे उतरते दिखाई पड़ते हैं। इनके योगदान के बदौलत हिन्दी साहित्य ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक काल का जनक माना और नेपाली साहित्य ने पं.मोतीरीम भट्ट को माध्यमिककाल में श्रृंगारकाल का जनक मानकर दोनों प्रवर्तकों की गरिमा को समुन्नत करने में सहयोग किया है। प्रतिपादित विषय में शोध करने का उद्देश्य हिन्दी एवं नेपाली शोध के क्षेत्र में इन महान विभूतियों के द्वारा अल्पायु में किये गए अभूतपूर्व योगदान को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना। तुलनात्मक शोध के क्षेत्र में हिन्दी और नेपाली साहित्य को समीप से अध्ययन करना। अनुसन्धान के क्षेत्र में द्विभाषी साहित्य का अध्ययन कर हिन्दी की समृद्धि में एक अध्याय जोड़ना भी इस शोध का लक्ष्य रहेगा। साथ ही हिन्दी और नेपाली शोध के क्षेत्र में जो न्यूनता है, प्रस्तावित शोध इस क्षेत्र को पूर्ण करने हेतु उठाया गया एक कदम मात्र है। भावी शोधार्थियों के लिए इस विषय में शोध की अपार संभावनाएँ निहित है। समग्र विषयों के अध्ययन मनन से इस इस बात का संकेत स्पष्ट है कि तुलनात्मक शोध शोध के क्षेत्र में इन दो महा पुरुषों पर बहुत कार्य अन्य विषयों पर हुए हैं अथवा वर्तमान में भी हो रहे हैं, परन्तु सम्बन्धित विषय में संलग्न रहकर किसी भी शोधार्थी का शोध-कार्य उक्त विषय में प्राप्त न होने से प्रस्तावित विषय हिन्दी एवं नेपाली तुलनात्मक शोध के क्षेत्र में विशुद्ध नवीन ठहरता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

१. **हिन्दी ग्रन्थ सूची**:

1. डॉ.रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गद्य साहित्य,विश्वविद्यलय प्रकाशन, वाराणसी, पंचम संस्करण-२००६
2. आधुनिक हिन्दी कविता का वैचारिक पक्ष, रतन कुमार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण-२०००ई
3. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास-द्वितीय खण्ड,डॉ.गणपतिचन्द्र गुप्त, १२वां संस्करण-२०१०
4. कर्मेन्दु शिसिर, हिन्दी नवजागरण और जातीय गद्य परम्परा,आधार प्रकाशन पंचकुल -हरियाणा, प्रथम संस्करण२००८
5. नामवर सिंह, हिन्दी का गद्यपर्व,राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली पटना इलाहवाद, दूसरा संस्करण-२०१३
6. बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-२०१०
7. प्रो.गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, चौथा संस्करण-२०१४
8. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाशन,नवां संस्करण-२०१३
9. डॉ.बाबूराम, हिन्दी निबन्ध साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन,वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण-२००२
10. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का इतिहास -२, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-२०११
11. नामवर सिंह, हिन्दी का गद्यपर्व, राजकमल प्रकाशन-इलाहबाद, दूसरा संस्करण-२०१३
12. मुनीश शर्मा, हिन्दी नाटक मानाधिकारों की रंगभूमि, तक्षसिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-२०१३
13. सम्पादक-डॉ.नगेन्द्र-डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स अंसारी रोड-नयी दिल्ली, ७२वां संस्करण २०२०
14. रामस्वरुप चतुर्वेदी, हिन्दी काव्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन-इलाहबाद, संस्करण-२०१२
15. डॉ.कुसुम राय, हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, विश्वविद्यलय प्रकाशन, द्वितीय संस्करण-२०१७
16. डॉ.केशरी नारायण शुक्ल, भारतेन्दु ने निबन्ध, सरस्वती मंदिरजतनबर, बनारस
17. राधाकृष्णदास, भारतेन्दु बाबू हरिस्चन्द्र का जीवन चरित्र,हिन्दी समिति उत्तरप्रदेश, नवीन संस्करण, १९७६
18. डॉ.वीरेन्द्रकुमार शुक्ल, भारतेन्दु का नाट्यसाहित्य,रामनारायणलाल प्रयाग, प्रथम संस्करण-१९५५
19. डॉ.मधुरादत्त पाण्डेय, शेध ग्रन्थ-नेपाली और हिन्दी भक्ति काव्य का तुलनात्मक अद्यन, भारतीयग्रन्थ निकेतन १३३ लाजपतराय मार्केट, दिल्ली

२. नेपाली ग्रन्थ सूची

1. गणेशबहादुर प्रसाई, माध्यमिककालिक काव्यसाहित्यको विवेचना, नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, प्रथम संस्करण-२०६१
2. प्रा.केशवप्रसाद उपाद्याय, विचार व्याख्या, साझा प्रकाशन, काठमाण्डौ, प्रथम संस्करण-११००
3. बालकृष्ण सम, मोतीराम (नाटक), साझा प्रकासन, प्रथम संस्करण-२०३३
4. गणेशबहादुर प्रसाई, सुवानन्ददासदेखि राजीवलोचनसम्म, साझा प्रकाशन, काठमाण्डौ, प्रथम संस्करण
5. कृष्णचन्द्रसिंह प्रधान, नेपाली पन्यास र उपन्यासकार, साझा प्रकासन, ललितपुर, नेपाल, तेस्रो संस्करण वि.सं.२०५२
6. असीत राई, भारतीय नेपाली साहित्यको इतिहास, साझा पुस्ततक प्रकाशन,दार्जीलिङ,
7. बालकृष्ण सम, मोतीराम भट्ट-नाटक, साझा प्रकाशन, प्रथम संस्करण सं.२०३३
8. डॉ.तारानाथ शर्मा, नेपाली साहित्यको इतिहास, विद्यार्थी पुस्तक भण्डार, पाँचौं संस्करण-२०७०

[18]. डॉ. भट्टराई गोविन्दराज काव्यिक आन्दोलनको परिचय, साझा प्रकाशन, संस्करण तेस्रो-२०६७
शीर्षक-मोतीमण्डली-पृष्ठ-१६६

[19]. बालकृष्ण भट्टराई,रुपन्देही साप्ताहिक पत्रिका,साभार संक्षिप्त अध्ययन वर्ष-१ अंक-१,

9. प्रों.घनस्याम नेपाल, नेपाली साहित्यको परिचयात्मक इतिहास, जनपक्ष प्रकाशन, दोस्रो संस्करण-सन् १९९४

३. साहित्यिक पत्र पत्रिका सूची:

1. सम्पादक-भरतप्रसाद लामिचाने, पल्लव साहित्यिक पत्रिका-त्रैमासिक, नेपाल
2. रुपन्देही साहित्यिक पत्रिका, नेपाल
3. https://ne.wikipedia.org/w/index
4. https//sahityikpatrika.wordpress.com